श्रीबगलामुखि त्रिकालसंध्या उपासना विधि

SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

Shri Raj verma ji
09897507933, 07500292413

जिस समय गुरु शिष्य को मंत्रोपदेश देते हैं, शिष्य को उसी समय से ही उस मंत्र की मंत्र संध्या प्रारम्भ कर देनी चाहिये। मंत्रसंध्या रहित साधक की मंत्र साधना पूर्ण फल प्रदान नहीं करती है। अतः गुरु को मंत्रोपदेश के साथ ही संध्याकर्म का उपदेश भी शिष्य को दे देना चाहिये।

जहां से सूर्य उदित होते हैं और जहां वे अस्त होते हैं उस प्राणात्मा में सम्पूर्ण देवता अर्पित हैं। उनका कोई भी उल्लंघन नहीं कर सकता। ये ही वह ब्रह्म हैं। (शतपथब्राह्मण)

सूर्य नारायण की अनुपस्थिति में जैन मुनि भोजन भी नहीं कर सकते। नमस्कार संहिता, पौरिषी आदि प्रत्याख्यान के क्रम में काल की सीमा का निर्धारण सूर्योदय से किया जाता है। महाभारत युद्ध के समय संध्याकाल में कौरव-पाण्डव युद्ध का त्याग कर संध्यापूजन किया करते थे।

भगवान् सूर्य ही दिन-रात के काल का विभाजन करते हैं। पंच देवताओं में सूर्य नारायण की गणना होती है (गणेश, विष्णु, शिव, दुर्गा, सूर्य)। जिनकी पूजा सर्वमंगल कार्यों में की जाती है। सूर्य भगवान् अन्य ग्रहों के साथ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाश एवं ऊर्जा प्रदान करते हैं। जिससे सम्पूर्ण सृष्टि का संचालन होता है। सभी प्राणियों को जन्म से ही भगवान् सूर्य के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं। अन्य किसी भी देवता की स्थिति में कोई संदेह हो सकता है, परंतु सूर्य भगवान् की सत्ता में कोई संदेह नहीं कर सकता है। इसलिये उनके उदय, मध्य एवं अस्ताचल के समय उनका अर्घ्य एवं मंत्रोपासना के साथ स्वागत-सत्कार करना चाहिये। सूर्य भगवान् प्रत्यक्ष देवता एवं ग्रहपति हैं, जो हमारे शुभ-अशुभ कर्मों के साक्षी देवता हैं। इसलिये त्रिकाल संध्या में अपने इष्ट देवता के साथ सूर्यनारायण का भी संक्षिप्त पूजन अवश्य करना चाहिये।

त्रिकाल संध्या माहात्म्य :- प्रातःकालीन संध्या तारों के रहते सूर्योदय के समय श्रेष्ठ होती है। उषा की लाली से पूर्व ही स्नान करना उत्तम माना गया है। इससे प्राजापत्य फल प्राप्त

होता है। मध्यकालीन संध्या के समय सूर्य भगवान् आकाश के शिखर पर आरूढ़ होते है तथा सायंकालीन संध्या तारों के दिखाई देने से पूर्व जब सूर्य भगवान् लाल आभायुक्त अस्ताचल को प्रस्थान करते हैं, उत्तम होती है। प्रातःकाल सूर्यनारायण की ओर मुख करके जप करने से मनुष्य महाव्याधि के भय से मुक्त हो जाता है। उसका दारिद्रय नष्ट हो जाता है। मध्याह्न में सूर्य की ओर मुख करके जप करने से मनुष्य सद्यः उत्पन्न पांच महापातकों से मुक्त हो जाता है तथा त्रिकाल संध्या उपासना करने से मनुष्य भाग्यवान हो जाता है। एक वर्ष तक त्रिकालसंध्या उपासना करने वाला मनुष्य सैकड़ों यज्ञों का फल प्राप्त करता है। याज्ञवल्क्यस्मृति में कहा गया है- 'इस पृथ्वी पर जितने भी स्वकर्मरहित द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) हैं, उनको पवित्र करने के लिये ब्रह्माजी ने संध्या की उत्पत्ति की है। रात या दिन में जो भी अज्ञानवश विकर्म हो जायें, वे त्रिकालसंध्या करने से विनष्ट हो जाते हैं।' अत्रि ऋषि कहते हैं- 'नियमपूर्वक जो लोग प्रतिदिन संध्या करते हैं, वे पापरहित होकर सनातन ब्रह्मलोक को प्राप्त होते हैं।'

संध्या न करने से दोष :- जिसने संध्या का ज्ञान नहीं किया, जिसने संध्या की उपासना नहीं की, वह द्विज जीवित रहते शूद्र के समान रहता है और मृत्यु के बाद कुत्ते आदि की योनि प्राप्त करता है। (देवीभागवत)

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि संध्या नहीं करें, तो वे अपवित्र हैं और उन्हें किसी पुण्य कर्म के करने का फल प्राप्त नहीं होता। (दक्षस्मृति)

समय पर की गयी संध्या इच्छानुसार फल प्रदान करती है और बिना समय की गयी संध्या बंध्या स्त्री के समान होती है। (मित्रकल्प)

प्रातःकाल में तारों के रहते हुए, मध्याह्नकाल में जब सूर्य आकाश के मध्य में हों, सायंकाल में सूर्यास्त के पूर्व ही इस तरह तीन प्रकार की संध्या करनी चाहिये। (देवीभागवत)

प्रातःकाल में पूर्व की ओर मुख करके जब तक सूर्य का दर्शन न हो और सायंकाल में पश्चिम की ओर मुख करके जब तक तारों का उदय न हो, तब तक जप करते रहें। (याज्ञवल्क्यस्मृति)

शास्त्र-पुराणों में संध्यापूजन का अत्यन्त विस्तृत पूजन का उल्लेख मिलता है जिसे आज के व्यस्त भौतिक युग में सम्पन्न करना अत्यन्त कठिन प्रतीत होता है। इस कारण अधिकांश गृहस्थ साधक संध्यापूजन को या तो विधि के अभाव में अथवा समय के अभाव में सम्पन्न नहीं कर पाते। कई साधकों के आग्रह करने पर संध्या पूजन का संक्षिप्त, प्रभावी एवं सरल विधान प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूं। जिस सत्युग में हमारे ऋषियों-मुनियों ने देवोपासना आदि कर्म तंत्रशास्त्र एवं पुराणों में समाहित किये थे, उस समय मनुष्य के पास आध्यात्म एवं मंत्रोपासना कर्म करने हेतु समय, आयु, बल एवं आरोग्यता की कोई समस्या नही होती थी, परंतु कलिकाल में इन सबका अत्यन्त अभाव है। अतः जिन साधकों के पास पर्याप्त समय या विधि उपलब्ध न हो तो उन्हें स्वकल्याण हेतु संक्षिप्त रूप से त्रिकाल मंत्रसंध्या को सम्पन्न कर लेना चाहिये, क्योंकि कुछ न करने से कुछ करना ही उत्तम होता है।

सर्वप्रथम साधक कुल परम्परानुसार गुरुमुख से दीक्षा एवं आज्ञा प्राप्त करे। साधक स्नानादि कर्म के पश्चात् पीतवस्त्र धारण कर,

ग्रहमन्दिर में पूर्वाभिमुख बैठकर, धूप दीपक प्रज्जवलित कर, प्राणायाम एवं आचमनादि कर, गुरु सहित पंचदेवताओं एवं नवग्रहों को पुष्पादि अर्पित कर उनका संक्षिप्त पूजन करें। तत्पश्चात् सूर्य भगवान् का ध्यान करते हुए सूर्य गायत्री मंत्र की एक माला करे। 'ॐ आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।' अथवा सूर्य मंत्र का जप करें। 'ॐ घृणिः सूर्य आदित्योम्।' इसके उपरान्त् रक्तपुष्प, चन्दन एवं केसर आदि युक्त अर्घ्य सूर्य भगवान् को गायत्री मंत्र से प्रदान करना चाहिये। सुबह और दोपहर को एक एड़ी उठाये हुए खड़े होकर अर्घ्य देना चाहिये। सुबह कुछ झुककर खड़ा होवे और दोपहर को सीधे खड़े होकर तथा शाम को बैठकर अर्घ्य प्रदान करना चाहिये। नदी या सरोवर के अतिरिक्त पवित्र स्थान पर अर्घ्य दें, जहां पर वह किसी के पैर न लगें। अच्छा है किसी बर्तन में अर्घ्य देकर उसे वृक्ष के मूल में डाल दिया जाये। अर्घ्य प्रदान करते हुए सूर्यमण्डल में अपने इष्टदेवता के स्वरूप का ध्यान करना चाहिये। जो सूर्योपासक हो वह सूर्योपनिषद एवं आदित्य हृदय स्तोत्र का भी पाठ कर सकते हैं। सूर्य पूजन के साथ ब्रह्म गायत्री का जप भी किया जाता है, परंतु जो

भगवती पीताम्बरा या अन्य देवता का उपासक हो, वह सूर्य पूजन के साथ अपने इष्ट देवता का ही मुख्यरूप से पूजन करे।

प्रातःकालीन श्रीसूर्य ध्यान :-

हंसारूढां सिताब्जे त्वरुणमणिलसद्भूषणां साष्टनेत्रां

वेदाख्यामक्षमालां स्रजमयकमलं दण्डमप्यादधानाम्।

ध्याये दोर्भिश्चतुर्भिस्त्रिभुवन जननीं पूर्वसंध्यादिवन्द्याम्।

गायत्रीमृक्सवित्रीमभिनव वयसं मण्डले चण्डरश्मेः।।

विश्वमातः सुराभ्यर्च्ये पुण्ये गायत्रि वेधसि।

आवाहयाम्युपास्त्यर्थमेह्येनोध्नि पुनीहि माम्।।

मध्याह्नकालीन श्रीसूर्य ध्यान :-

वृषेन्द्रवाहना देवी ज्वलत्त्रिशिखधारिणी।

श्वेताम्बरधरा श्वेतनागाभरणभूषिता।।

श्वेतस्रगक्षमालालंकृता रक्ता च शंकरा।

जटाधराधराधात्री धरेन्द्रांगभवाम्भवा।

मातर्भवानि विश्वेशि आहूतैहि पुनीहि माम्।।

सायंकालीन श्रीसूर्य ध्यान :-

संध्या सायन्तनी कृष्णा विष्णुदेवा सरस्वती।

खगगा कृष्णवक्त्रा तु शंखचक्रधरापरा।।

कृष्णस्रगभूषणैर्युक्ता सर्वज्ञानमयर वरा।

वीणाक्षमालिका चारुहस्ता स्मितवरानना।।

मातर्वाग्देवते स्तुत्ये आहूतैहि पुनीहि माम्।।

सूर्य पूजन के उपरान्त् महामाया भगवती बगला का ध्यान करते हुए उनकी उत्तम सामग्रियों से पूजन करते हुए 11 माला का जप अवश्य करें। 'ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।' एक माला भगवान् भैरव या मृत्युंजय की अवश्य करनी चाहिये। 'ॐ नमो भगवते महारूद्राय।' अपनी पूजन विधि को पूर्णतः गुप्त रखें। 'अनेन संध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरिः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सत् श्रीबगलार्पणमस्तु।' इस मंत्र से संध्योपासनकर्म का समर्पण भगवती बगला को करें।

यदि मनुष्य समय के अभाव में त्रिकाल संध्या पूजन करने में अक्षम हो तो, प्रातः एवं सायं काल का संध्याकर्म अवश्य करें। किसी कारणवश दोनों समय भी न कर पाये तो एक समय में ही सम्पन्न कर क्षमा याचना कर लेनी चाहिये।

प्रातःकालीन श्रीबगला ध्यान :-

गम्भीरां च मदोन्मत्तां, स्वर्णकान्ति समप्रभाम्।

चतुर्भुजां त्रिनयनां, कमलासन संस्थिताम्।।

मुद्गरं दक्षिणे पाशं, वामे जिह्वां च वज्रकम्।

पीताम्बर धरां सौम्यां, दृढपीन पयोधराम्।।

पीतभूषण भूषांगीं, धृत चन्द्रार्द्ध शेखराम्।

रत्न सिंहासनासीनामम्बां त्रैलोक्य सुन्दरीम्।

एवं ध्यात्वा तु देवेशीं प्रातोपस्थानं समाचरेत्।।

मध्याह्न कालीन श्रीबगला ध्यान :-

दुष्ट स्तम्भनमुग्र विघ्न शमनं दारिद्र्य विद्रावणम्।

भूभृद-भीः शमनं सदा मृगदृशां चेतः समाकर्षणम्।।

सौभाग्यैक निकेतनं ममदृशोः कारुण्य पूर्णेक्षणम्।

मृत्योर्मारण माविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः।।

एवं माध्यन्दिनोपास्ति क्रूर कर्मसु पुत्रक!।

सायंकालीन श्रीबगला ध्यान :-

मातर्भंजय मे विपक्ष वदनं जिह्वांचला कीलय।

ब्राह्मी मुद्रय मुद्रयाशु धिषणामंघ्र्योर्गतिं स्तम्भय।।

शत्रूंश्चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौरांगि! पीताम्बरे!।

विघ्नौघं बगले! हर प्रतिदिनं कारुण्य पूर्णेक्षणे।।

सायमौपास्तिकं कुर्यादेवमेतत् कुमारक!।

विघ्नग्रह विनाशाय, एवं ध्यायेज्जगन्मयीम्।।

प्रतिदिन बगला मूलमंत्र अथवा बगला गायत्री मंत्र के एक हजार जप करने से छः माह में मंत्र सिद्धि प्रदान करता है। मनुष्य भगवती की प्रसन्नता के साथ सर्वशत्रु एवं रोगों से मुक्त होकर परम सौभाग्य को प्राप्त करता है। समय और परिस्थितिनुसार जप को कम अथवा अधिक किया जा सकता है। अगर समय की अधिकता हो तो भक्तिपूर्वक बगला कवच, हृदय और शतनाम का पाठ भी कर लेना चाहिये। मंत्रसंध्या कर्म समस्त

मंत्र साधनाओं के अंगस्वरूप ही है। अंगहीन मंत्रोपासना से देवता प्रसन्न नहीं होते, फलतः सिद्धि प्राप्त नहीं होती। अतः साधक को मंत्र संध्या रूपी कर्म अवश्य करना चाहिये।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana